eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर का स्त्री विषयक चिन्तन एवं 21वीं सदी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

(तुलनात्मक अध्ययन)

[1]**नेहा रानी**
शोधार्थी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, के0जी0के0 पीजी कालेज, मुरादाबाद

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

मध्यकालीन सामंती व्यवस्था में साहित्य में अभिजात्यता विद्यमान थी। मध्यकाल से पूर्व स्त्री साहित्य के केंद्र में नहीं थी। कबीर मध्यकालीन हिंदी साहित्य में अपनी कविता में स्त्रियों संबंधी अंगूठे चित्रण के लिए जाने जाते हैं। कबीर की कविताएं उनके समकालीन महिलाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। कबीर की कविता उनके समय में महिलाओं की सामाजिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं को दर्शाती है।

बीच शब्द– कबीर, स्त्री विषयक चिन्तन, 21वीं सदी के उपन्यास, स्त्री विमर्श।

Introduction

कबीर चिंतन को और अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए 21वीं सद़ी की महिला उपन्यास लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री विमर्श का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से हमारा उद्‌देश्य इस बेहतर समझ को हासिल करना है कि समय के साथ महिलाओं की सोच और सामाजिक भूमिकाएं कैसे विकसित हुई हैं, और इस शोधपत्र का उद्देश्य कबीर की कविताओं के एक महत्वपूर्ण पहलू पर प्रकाश डालना और साहित्य में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर चल रहे विमर्श में योगदान देना है।

कबीर का साहित्य उनके समकालीन महिलाओं की सामाजिक स्थिति को देखने का अवसर प्रदान करता है। अपने साहित्य में कबीर ने स्त्री के चरित्र चित्रण के माध्यम से समकालीन समाज में महिलाओं की प्रचलित विभिन्न रूपों को प्रस्तुत किया है। कबीर पति–पत्नी के बीच समानता और प्रेम का समर्थन करते हैं। धर्मवीर भारती के अनुसार ''कबीर आजीवक थे इसलिए लौकिक थे तथा सन्यासी और कामी नही थे। प्रेम और विवाह के मामले में वे अपनी गारण्टी देते हैं और दूसरों की गारण्टी लेते हैं– ''नाँ हौं देखौ और कूँ, नाँ तुझ देखन देऊँ।''[1] जिन स्त्री पुरुष संबंधों की बात कबीर कर रहे थे उन्ही स्त्री पुरुष संबंधों को व्याख्यायित करती हैं आधुनिक युग की महिला उपन्यास लेखिकाएं। इन्हें इसलिए चुना गया क्योंकि उपन्यास का विस्तृत फलक इतने व्यापक विषय को अपने अंदर समेट सकता है। जीवन की छोटी–बड़ी बातों को उसमें बड़ी

©IJARMS JOURNAL, 2024

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

विशेषता से दिखाया जा सकता है। स्त्री के जिन रूपों को कबीर श्रेष्ठ बताते हैं वह एक माँ, एक पत्नी है, कबीर अपनी कविताओं में स्त्री तत्व का वर्णन करते हैं और संपूर्ण विश्व चेतना को उससे अभिन्न मानते हुए उसमें अटूट आस्था भी रखते हैं। कबीर के सहित्य में महिलाओं की भूमिकाएँ व्यापक है और जिम्मेदारियाँ भी अधिक। कबीर समर्पित महिलाओं को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करतें है।उनकी रचनाओं में स्त्रियों का चित्रण विभिन्न रूपों में मिलता है– मां, पत्नी और बेटी के रूप में। कबीर के लिए मां का स्थान सर्वोच्च था उन्होने मां को ईश्वर का स्वरूप माना है। उसके कर्मों एवं महत्व को कबीर जैसा विद्धान ही एक छोटी सी साखी में बता सकता है लेकिन उसकी मां की व्यथा का फलक इतना विस्तृत है जो उपन्यास जैसी विधा में ही अभिव्यक्त किया जा सकता है।

प्रख्यात उपन्यास लेखिका अणुशक्ति सिंह ने इसी मां की व्यथा को अभिव्यक्त करने के लिए पौराणिक पात्र शर्मिष्ठा को चुना है। समकालीन संदर्भों को अपने में समेटे यह उपन्यास आधुनिकता की दृष्टि से एक सफल उपन्यास है। शर्मिष्ठा में लेखक ने पौराणिक आख्यान के माध्यम से अनेक समकालीन समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की है, जिसमें से एक समस्या मातृत्व की भी है। बदलते प्रवेश के नवीन मूल्य में भले स्त्रियों ने भले ही समस्त परंपरागत मूल्यों एवं पुरुष सत्ता को अस्वीकार कर दिया है किंतु एक स्त्री होने की गरिमा को नहीं छोड़ा। स्त्री का वह माता रूप जो कबीर के लिए पूजनीय था उपन्यास में वही मातृत्व शक्ति का संचारक है। शर्मिष्ठा समस्त सामाजिक बंधनों एवं संबंधों को सिरे से खारिज कर देती है। इतनी यातना के बाद अब उसे कोई बंधन स्वीकार नहीं। उसका एक मन है–आत्मविश्वास से भरी सशक्त मां का मन। यथा– ''क्षमा महाराज मैं आपकी ब्याहता नहीं हूं मैं केवल अपने पुत्र की माता हूं।''[2]

गीता श्री का बहुचर्चित उपन्यास हसीनाबाद मातृत्व के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। उपन्यास में मातृत्व के कई प्रेरणादायक उद्धरण है जो जीवन में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं। हसीनाबाद उपन्यास की प्रमुख पात्र चंपा मातृत्व का आदर्श उदाहरण है। वह अपने बच्चों के लिए तन–मन से समर्पित है और उनकी भलाई के लिए हर संभव प्रयास करती है, उन्हें प्यार शिक्षा और संस्कार प्रदान करती है। हसीनाबाद की अन्य पात्र रानी मातृत्व के प्रति अपने कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाती है वह न केवल अपने बच्चों को सदाचार और नैतिकता का महत्व सिखाती है बल्कि वह उन्हें आत्मनिर्भर भरने के लिए भी प्रेरित करती है इसी उपन्यास में जमुना गरीब महिला है जो अपने बच्चों के लिए बहुत संघर्ष करती है भोजन, शिक्षा प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत करती है, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

यहां पर यह ध्यान देने की बात है की कबीर का स्त्री चिंतन भक्ति और आध्यात्मिकता से प्रेरित है जबकि आधुनिक महिला उपन्यासकारों का स्त्री विमर्श सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर केंद्रित है। कबीर अपने समय के एक महान संत कवि थे जिन्होंने समय में व्याप्त रूढ़ियों के खिलाफ आवाज उठाई थी। उनका स्त्री चिंतन भी उस समय के सामाजिक ढांचे के अनुरूप है। कबीर सच्चे अर्थों में समाज सुधारक माने जाते हैं तथा कबीर कई अर्थों में आधुनिक युग में प्रासंगिक भी है। समाज के दो आधारभूत स्तंभों स्त्री एवं पुरुष के बीच संतुलन बनाने में कबीर की आधुनिकता फिर से विचारणीय है। क्योंकि आधुनिकता की मूलभूत शर्त– समानता की बात कबीर अपनी कविता में करतें है तथा लिंग की परवाह किए बिना सभी व्यक्तियों के लिए सम्मान और भक्ति के महत्व पर भी जोऱ देते हुए लिखते है–

''नारी पुरुष सभी सुनो यह सतगुरु की साखी,

विश्व फल फले अनेक है मति कोई देखो चाखी।''

यहां पर कबीर ने स्त्री पुरुष में बिना लैंगिक भेद के दोनों को शिक्षा देते हुए भक्ति के मार्ग को अवरुद्ध करने वाले लोभ और वासना के फल को चखने से मना करते हैं। समाज की मूलभूत इकाई परिवार तथा परिवार रूपी गाड़ी के दो पहिए– स्त्री और पुरुष के मध्य कबीर जो सन्तुलन स्थापित कर रहे थे वही कार्य मनीषा कुलश्रेष्ठ अपने उपन्यासों के माध्यम से कर रही हैं। वे लिखती हैं–'' स्त्री और पुरुष के बीच सन्तुलित पूरेपन का अहसास है हमें। बिना अलगाववादी फेमिनिज्म के हम पारम्परिक तौर पर समतावादी है।''[3] आधुनिक महिला उपन्यासकार स्त्री–पुरुष समानता पर बल देती हैं। वे पुरुष–प्रधान समाज में स्त्री को समान अधिकार और अवसर दिलाने की बात करती हैं।

स्त्री तत्व में कबीर की अटूट विश्वास था, वे महिलाओं को सक्षम मानते हैं। कबीर के यहाँ स्त्रियों के साथ कमजोरी या असुरक्षा जैसा कोई भी भाव दिखाई नही देता है। कबीर का स्त्री विषयक सम्पूर्ण काव्य शक्ति का काव्य रहा है, वह शक्ति जो पर पुरुष के अत्याचार पर स्वतः जाग्रत हो जाती है– बैरी मारे दाव से, ये मारै हंसि खेल''। 21वीं सदी के स्त्री विमर्श का मूल आधार यही शक्ति का प्रश्न है। प्रसिद्ध लेखिका मृणाल पांडे का यह मानना है कि ''अगर विचार करना है, तो स्त्री की शक्ति के संदर्भ में करना होगा क्योंकि मूल पीड़ा शक्ति के असंतुलित वितरण से उपजी विभिन्न प्रकार की विसंगतियों को लेकर है।''[4] नारी विमर्श का वर्तमान रूप सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक सभी दृष्टियों को साथ लेकर चलता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

यदि उनके स्त्री विशेष से सम्बंधित दोहो को देखा जाए तो वे स्त्री को शक्ति का केंद्र मानते हैं वह उसको प्रताड़ित करने की बात नहीं करते हैं उन्हें ही पता है कि एक स्त्री अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर सकती है किंतु यदि हम पराई स्त्रियों के चक्कर में पढ़ते हैं तो हम कभी अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते । कबीर संत थे उनका अभीष्ट ईश्वर प्राप्ति का था इसलिए स्त्री को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक मानते थे, मतलब यह नहीं कि वह स्त्री विरोधी थे वह स्वयं स्त्री रूप में ही ईश्वर की आराधना कर रहे थे, इन्हीं स्त्री–परुष सम्बन्धों पर कबीर का संपूर्ण रहस्यवाद टिका है। कबीर ने कहीं भी स्त्री के संपूर्ण रूप की निंदा नहीं की है बल्कि वे नारी निंदा के घोर विरोधी हैं वे तो उसे रत्नों की खान मानते है–

''नारी निंदा न करो, नारी रतन की खान,
नारी से नर होत है, ध्रुव प्रहलाद समान।''

''नारी निंदा ना करो नारी रतन की खान'' केवल एक ही पंक्ति कबीर की स्त्री विशेष सोच और उनके समकालीन स्त्री की स्थिति का वर्णन करने में समर्थ है। यहां कबीर स्त्री के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं। नारी की निंदा न करने की बात कह के कबीर अपने समय में स्त्रियों के प्रति हो रहे सामाजिक आध्यात्मिक सांस्कृतिक सभी प्रकार के भेदभाव एवं अत्याचारों की अभिव्यक्ति करते हैं, जिसका व्याख्यान 21वीं सदी की महिला उपन्यास लेखकों ने अपने उपन्यासों में की है। गीता श्री ने अपने उपन्यास 'माई' में उपन्यास की केन्द्रीय पात्र माई की स्थिति का वर्णन किया है– ''माई हमेशा झुकी रहती थी हमें तो पता है, हम उसे शुरू से देखते आये हैं हमारी शुरुआत ही उसकी भी शुरुआत है। तब से वह सेवा मन से झुकी हुई साया सी थी इधर से उधर फिरती सबकी जरूरतों को पूरा करने में जुटी।''[5]

वर्तमान में 21वीं सदी के उपन्यास स्त्री विमर्श के उन सभी विषयों को केंद्र में लेकर चलता है जिनके बारे में कबीर कहना चाहते थे वर्तमान में स्त्री विमर्श में स्त्रियों ने अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए घर में ही नहीं बाहर में भी अपनी स्थिति को सुधारा है। कबीर अपनी कविताओं में स्त्री तत्व का महिमामंडन करते हैं संपूर्ण विश्व चेतना को उससे अभिन्न मानते हुए अटूट आस्था भी रखते हैं वह उसमें माँ और बेटीपन की भावनाओं को पहचानते हैं और अपने अन्र्त के विकारों को नष्ट करने का एक आसान संसाधन के रूप में देखते हैं। यह भी सत्य है कि कबीर ने अपनी कविता में महिला विरोधी पंक्तियां भी लिखी हैं जिनकी व्याख्या विश्लेषण अनेक आलोचकों ने किया है, किन्तु ''नारी निदा न करो'' में कबीर ने स्त्री की जटिल सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति को दर्शाया है जो

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के चित्र प्रस्तुत करती है। पुरुष प्रधान समाज में नारी के प्रति हो रहे शोषण एवं अत्याचारों का कच्चा चिट्ठा ही स्त्री संघर्ष की महागाथा है आधुनिक उपन्यास। जिसमें उसके प्रतिरोध एवं आत्मसम्मान के स्वरों की गूँज आसानी से सुनी जा सकती है।

मधुकांकरिया का बहुचर्चित उनन्यास 'सेज पर संस्कृत' की नायिका संघमित्रा भी इस तरह की जटिल सामाजिक परिस्थितियों का भरपूर प्रतिरोध इन शब्दों में करती है–"नहीं सर, मैं इस गंदगी में लोट नहीं लगा सकती। मैं इस हवा–पानी की जीव नहीं। यदि मैं आत्मविहीन हो गई, मेरा स्वाभिमान पराजित हो गया, गर्दन मरोड़ दी गई उसकी तो कितनी दूर जा पाऊँगी मैं? जब जीवन ही हाथ से निकल जाएगा तो जीविका लेकर क्या करूंगी मैं?''[6]

आधुनिक काल में स्त्रियां तन मन के साथ धन से भी अपने परिवार की सेवा करती हैं। मध्यकाल में स्त्रियों के घर थे दरवाजे न थे, वे केवल पुरुषों के लिए खुलते थे। जिनके साकलों के टूटने की आहट कबीर के साहित्य में प्ररम्भ से ही गूंज रही है। वर्तमान में स्त्रियों ने दरवाजे की बाहर की दुनिया में रहकर अपने परिवार को साधा है।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–</u>

1– डॉ0 युगेश्वर– कबीर समग्र, प्रथम खण्ड, हिंदी के प्रचारक संस्थान, वाराणसी, द्वितीय संसकरण 1995, पृ0 253
2– सिंह अणुशक्ति– शर्मिष्ठा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण2020 पृ0 146
3– कुलश्रेष्ठ मनीषा– पंचकन्या, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ0 9
4– यादव उषा (2018) स्त्री विमर्ष और महिला उपन्यास लेखन–, यश पब्लिकेशंस, नई दिल्लीपृ. 212
5– गीताश्री– माई उपन्यास राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 9
6– कंकरिया मधु.– सेज पर संस्कृत. नई दिल्ली. राजकमल प्रकाशन. संस्करण 2008. पृष्ठ 159

©IJARMS JOURNAL, 2024